International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 4.561 Volume 2, Issue 08, Aug 2015
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

# भारतीय आधुनिक समसामयिक कला और प्रमुख महिला चित्रकार

डॉ. अर्चना जोशी
व्याख्याता, चित्रकला.
राजकीय महाविद्यालय बून्दी, राजस्थान

सारांश ––

आज के आधुनिक कला जगत में महिला चित्रकारों का नाम प्रतिष्ठा के साथ लिया जाता है। जब भी कलाकृतियों की प्रदर्शनियां लगती है तो वहां प्रदर्शित कृतियों में महिला व पुरुष चित्रकारों की कृतियां समान रूप से प्रदर्शित होती है। ऑक्शन हाउस द्वारा जब कृतियों की बिक्री की जाती है तो भी महिला चित्रकारों द्वारा सृजित चित्रों की कीमत अन्य कृतियों से कमतर नहीं होती। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आज समसामयिक कला में महिला कलाकार पुरुषों के समकक्ष ही प्रसिद्धि पा रही है और सफल है। परंतु महिला कलाकारों को सफलता का यह मुकाम एकदम से हासिल नहीं हुआ। इस कला यात्रा में महिलाओं के सम्मिलित होने का सफर मुख्य रूप से 1800 ई के उपरान्त आरंभ होता है। आरम्भ में महिला चित्रकारों के सीमित नाम ही देखने को मिलते है। किन्तु 1970 के दशक तक आते–आते भारत में कई सिद्धस्त महिला कलाकारों के नाम प्रतिष्ठा से लिए जाने लगे। प्रस्तुत लेख इस कला यात्रा में अग्रणी आधुनिक समसामयिक महिला चित्रकारों के संदर्भ में है।

प्रमुख शब्द ––

समसामयिक, आधुनिक, महिला, चित्रकार

–––

आधुनिक भारतीय चित्रकला के इतिहास में महिला चित्रकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के आरम्भिक आधुनिक कला परिवेश में कुछ ही महिला कलाकारों के नाम लिये जाते हैं। परन्तु शनैः शनैः महिला चित्रकार कला के क्षेत्र में अधिक प्रभावशाली रूप से बढ़ी है। उनकी सफलता को हासिल करने का यह सफर क्रमशः 1800 ई. के. उपरान्त आरंभ होता है। आरंभ में कुछ कला केंद्र अंग्रेजों द्वारा स्थापित किय गए जिनमें सिर्फ अंग्रेजों को ही शिक्षित किया जाता था। धीरे–धीरे इनमें भारतीयों को प्रवेश दिया जाने लगा फिर इनमें से कुछ सरकारी कला केंद्र बना दिए गए।

तत्पश्चात इनमें से कुछ में भारतीय कलाकर प्रिंसिपल भी नियुक्त किए जाने लगे। भारत में कलाकेन्द्रों के उद्‌भव व विकास से महिला कलाकारों में भी जागृति आई जो धीरे–धीरे बढ़ती गई और 1970 के दशक तक आते–आते भारत में कई सिद्धस्त महिला कलाकारों के नाम प्रतिष्ठा से लिए जाने लगे।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के सिंगोर कान्स्टाब्टिनों आगस्तो ने सन् 1822 में बम्बई में 'स्कूल ऑफ आर्ट फार लेडीज' के नाम से ब्रिटिश महिलाओं के लिए एक स्कूल आरम्भ किया। इस स्कूल में भारतीय महिलाओं के लिए दरवाजे बन्द थे। ब्रिटिश शासनकाल में ही कलकत्ता में 1879 को युवा महिला कलाकारों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें रविन्द्रनाथ टैगोर की भतीजी गृहणी सुनयना देवी को अकृत्रिम कला (Naiva Art) के लिए 'सेलीब्रेटी स्टेटस' दिया गया। अन्य कलाकारों में सुकुमारी देवी, प्रतिमा टैगोर, सुशीला, लीला मेहता तथा सविता टैगोर का उल्लेख मिलता है।

भारत में आर्ट स्कूलों की स्थापना ने भारतीय महिलाओं के लिए प्रगति के सुअवसर प्रदान किए। कलकत्ता, मद्रास बम्बई तथा लाहौर (अब पाकिस्तान में) के कला विद्यालय 19 वीं सदी में स्थापित किए गये। इन कला विद्यालयों में 1950 के बाद महिला कलाकारों का एक बड़ा वर्ग विकसित हुआ। सर जे. जे. स्कूल के विद्यार्थियों में रतन बड़के, अंजेला त्रिन्दाडे, क्यूमी एच.डाल्स, शीरिन तथा जल बरिजी आदि नाम प्रमुख रहे। इन महिलाओं ने लंदन की रॉयल अकादमी की भाँति कला का अध्ययन किया तथा कला जगत में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

भारतीय उपमहाद्वीप में 1970 एक महत्वपूर्ण दशक रहा जिसमें कुछ आत्म जागृत महिला कलाकारों का उदय हुआ। वास्तव में महिला चित्रकारों का उद्देश्य, चिन्ताएँ एवं अभिव्यक्ति पुरुष चित्रकारों से थोडा भिन्न ही रही। भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन के पश्चात् राजनैतिक उथल–पुथल, मुल्कों के बँटवारों ने पुरुष कलाकारों के लिए एक अलग वातावरण बनाया परन्तु महिला कलाकारों की चिन्ताएँ बहुत भिन्न रहीं। उनकी आकांक्षाएं, जो कुछ नहीं मिला उसकी चाहत, समाज में सम्मान, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में समानता का स्थान, आत्माभिव्यक्ति को उभारने का प्रयास किया गया। भारत में आजादी के पश्चात् प्रथम दशक में कुछ महिला कलाकार जैसे शानू लहिरी, कमलाराय चौधरी, कमला दासगुप्ता, तथा अमीना अहमद आदि ने अपने को प्रोफेशनल कलाकार के रूप में स्थापित करने के लिए गंम्भीर प्रयास किये। 1986 में ललित कला अकादमी, त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली, भारत सरकार के मानवाधिकार एवं विकास मंत्रालय, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय, वूमन वेलफेयर मंत्रालय एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से 'भारतीय महिला कलाकार शीर्षक से देश की प्रमुख महिला कलाकारों की एक संयुक्त कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। निश्चित ही देश में महिला कलाकारों की यह प्रथम विशाल प्रदर्शनी थी, जिसमें देश की अनेक महिला कलाकारों को एक मंच प्रदान किया गया। इस प्रदर्शनी में 43 महिला कलाकारों की 73 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया था।

महिला चित्रकारों के संदर्भ में आधुनिक समसामयिक कला यात्रा की चर्चा करें तो यह स्वतंत्रता पूर्व से आरंभ होकर 1970 के दशक तक आते–आते एक परिपक्व मुकाम तक पहुंच जाती है। इस संदर्भ में अमृता शेरगिल का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है तत्पश्चात लीला मुखर्जी, देवयानी कृष्ण आदि से आगे बढ़ते हुऐ नीलिमा शेख तक आते–आते महिला चित्रकारों के नाम एक अत्यंत सुदृड व प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त कर लेते हैं।

लेख में हम इसी कला यात्रा में सम्मिलित कुछ प्रमुख अग्रणि महिला चित्रकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का उल्लेख करेंगे।

**अमृता शेरगिल :–**

1913 मैं जन्मी अमृता शेरगिल ने पश्चिम की कला कौशल का भारत की कला के साथ मेल बैठाकर  एक ऐसे समय में एक नई कला चेतना को उजागर किया जब भारत की आधुनिक काल का अपना कोई चेहरा नहीं उभरा था।

1934 से 1941 तक के 7 वर्षों के कार्यकाल में अमृता ने भारतीय आधुनिक काल में कई नए मानक व कीर्तिमान स्थापित कर दिए। इसीलिए कला विद्वान उन्हें आधुनिक समसामयिक महिला कलाकरों में सबसे अग्रणी मानते हैं।

**लीला मुखर्जीः–**

अमृता शेरगिल के पश्चात् जिन महिला कलाकारों का नाम आता है उनमें लीला मुखर्जी का नाम सर्वोपरि है। लीला मुखर्जी शान्ति निकेतन से कला शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रथम महिला थीं। उन्होंने दिल्ली कलकत्ता तथा बम्बई समेत अनेक शहरों में अपनी एकल प्रदर्शनी आयोजित की। इनके वुड कार्विग तथा ब्रॉन्ज कास्टिंग के शिल्प अत्यन्त सरल तथा मनोहारी है। उनकी रचनाएँ मुख्यतः जनजातीय कला से प्रभावित है। उनकी रचनाओं में नारी की लयबद्धता तथा रचनात्मक ऊर्जा का प्रस्फुटन होता है। 'फिंगर लिफ्टिंग फुट' तथा 'युगल' नामक शिल्पों में उनकी तकनीकी क्षमता तथा रचनात्मकता देखी जा सकती है, जिसमें जनजातीय कला की तरह की आकृतियाँ निर्मित की गयी हैं, जो उनके शिल्पों में कथ्य सरल तथा सटीकता लिए रहता है।

**देवयानी कृष्णा : –**

इंदौर में देव लालीकर की इस शिष्या ने अनेकों माध्यम एवं तकनीकों में कार्य किया। लोककला के विभिन्न रूपों, खिलौनों तथा मुखौटों से अत्यन्त प्रभावित रहीं। कहीं–कहीं पर वे पॉल क्ली से प्रभावित दिखीं, किन्तु उनकी अधिकतर कृतियाँ नव–आदिमवादी शैली की है। 1960 के आसपास उन्होंने कुछ अमूर्त डिजाइन भी विकसित किए। कुण्डली के समान भँवरदार तूलिका घात, रंगों की परिवर्तित रंगतें, तरलगति तथा जटिल संयोजनों के साथ अंकित आकृतियाँ तथा रूप, धब्बों के समान अलग–अलग प्रतीत होते हैं। उन्होंने अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कलाप्रदर्शनियों में भाग लिया तथा उनके कार्य को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

**जया अप्पास्वामी  :–**

1918 में ईसाई परिवार में जन्मी जया अप्पास्वामी एक कलाकार के साथ उत्कृष्ट लेखिका भी थीं।जया के चित्रों में मानव के प्रति विराग, वितृष्णा या संताप दिखाई नहीं देता। उनमें युद्ध का निर्मम ताप नहीं, देश के बँटवारे की रक्त नदियाँ नहीं, पूँजीवाद की कठोरद क्षुधा वेदना नहीं, उनके चित्र इन सभी सामाजिक, राजनीतिक व नैतिक झंझावतों की सीमा के बाहर अपनी सांस लेते हैं। उनके चित्र सामाजिक परिधियों के परे जाकर किसी दूसरी दुनिया में विचरते हैं।

उन्होंने चित्रों के सृजन के अतिरिक्त अपने लौकिक जीवन में भी भारतीयता का परिचय दिया। उन्हें चित्रों के आन्तरभाव से प्यार था। एक बार उन्होंने लंदन में क्रिस्टीज के नीलामी से एक पेंटिंग खरीदी तथा अपने एक

अंग्रेज मित्र से कहा 'मैं अपनी धरोहर वापस ले जा रही हूँ। यह सब हमारा पैतृक धन है। कब से बिछुड़ कर यहाँ भटक रहा था। भारतीय कला जगत में जया अप्पास्वामी के सार्थक प्रयास का सदैव सम्मान रहेगा।

**मीरा मुखर्जीः–**

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में मीरा मुखर्जी एक प्रबुद्ध महिला शिल्पकार के रूप में जानी जाती रहीं। अत्यन्त व्यक्तिवादी किस्म के उनके शिल्प किसी भी प्रकार के महिलावाद के परे हैं। उन्होंने अपने आप को पहले प्रोफेशनल तथा बाद में महिला के रूप में स्थापित किया। सर्वप्रथम उन्होंने पारम्परिक शिल्प सीखा तत्पश्चात् म्यूनिख जाकर तकनीकी तौर पर शिल्प का अनुशीलन किया। म.प्र. के बस्तर में जाकर जनजातीय जीवन व उनकी कला का अध्ययन किया। इसीलिए उनके आरम्भिक शिल्प जनजातीय पद्धति में ही कास्ट किए जाते थे। इन पद्धतियों में पं. बंगाल की धोकरा, बस्तर के गोरूअस तथा बिहार की मल्हार शैलियाँ प्रमुख हैं। उन्होंने धरातल के टेक्सचर का भरपूर उपयोग किया, जिनमें सजावटी आलेखनों से युक्त अलंकरण किए जाते थे। उन्होंने यथार्थ तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय किया है। साथ ही टेक्सचर तथा हारमनी का अनोखा तालमेल भी महत्त्वपूर्ण है। कोई भी शिल्पकार शायद ही जनजातीय कला से इतना प्रभावित रहा हो।

**पीलू पोचखुनवाला (1923)ः–**

इन्होंने यूरोप के अनेक संग्रहालयों का भ्रमण किया, जिनमें संग्रहित शिल्पों ने पीलू को अत्यन्त प्रभावित किया। तत्पश्चात् वे शिल्पकार बन गयी। उन्होंने बिना कला शिक्षा के शिल्पों का निर्माण किया। अपने आरम्भिक प्रयासों के समय श्री एन.जी. पन्सारे से कुछ समय के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया, परन्तु बाद में स्वयं ही कार्य करने लगी तथा कल के क्षेत्र में सक्रिय हो गयीं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भागीदारी करके उन्होंने अनेक पुरस्कार प्राप्त किये।

आपने व्यक्तिगत दार्शनिक जगत के विशुद्ध आकारों के साथ नये रचना संसार की रचना क उनके आरम्भिक शिल्प अत्यधिक उत्तल एवं अवतल युक्त तथा लयात्मक है। परन्तु बाद की मानवाकृतियाँ आकार में बड़ी, एकल मानव शरीर रचना के नियमों के अनुरूप एवं लोकनृत्य  में गति लिए हुए लोहे से वेल्ड करके बनायी गयी है। उनकी प्रमुख कृतियों में टाइम सर्कल मास्कडेय, वे साइड स्टेशन, सिटिंग वूमेन आदि प्रमुख हैं।

**नसरीन मोहम्मदी (1937) ः–**

नसरीन सम्भवतः प्रथम भारतीय महिला कलाकार थीं जिन्होनें विशुद्ध रूप से रेखा, रंग, शेड, तथा टेक्सचर का प्रयोग मिनिमल आर्ट की भांति किया है। सेंट मार्टिन स्कूल आफ आर्ट, लंदन में 1960 के दौरान वह लिखती हैं कि 'यह समय मेरे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूण है। विशुद्ध बिम्ब, विवेकयुक्त है, जिन बिम्बों को मैंने अब देखना आरम्भकिया है वह विशुद्ध तथा भावनाओं से अलग हैं। जिसमें सुख था, दुख से विहीन अवस्था है तथा पुनः कठिन अवस्था आरम्भ होती है। आरम्भ में उन्होंने कलरफुल अमूर्त अभिव्यजनावादी दृश्यचित्र तथा आर्गेनिक आकार बनाये तथा बाद में उन्होनें श्वेत–श्याम स्याही तथा पेंसिल से कार्य किया। बीमारी के कारण वे अधिक समय तक कार्य नहीं कर सकीं परन्तु उनका कार्य भारतीय कला की अमूल्य धरोहर हैं।

**अंजली इला मैनन (1941) ः–**

अंजली इला मैनन की कृतियां बहुत परिपक्व, गहरी तथा दुख और यथार्थ का बोध कराती है। उनके चित्रों के रंग बाइजेन्टाईन तथ मानवाकृतियां 'रसियन आइकन्स' की याद दिलाते है। उन्होने अपने चित्रों में अपने आप को आत्मकथा की भांति अंकित किया है। कहीं कहीं वह स्वयं चित्रों की पात्र बन जाती है। उनके चित्र शांति की सरल तथा तनाव भरी भावना उत्पन्न करते हैं।

अन्जली इला मेनन के जन्म 1940 भारत में हुआ। अंजली बंगाली अमेरिकन अभिभावकों की संतान है। आरम्भिक स्कूली शिक्षा तमिलनाडू से करने के पश्चातै जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट बोम्बे में अध्ययन किया। तदन्तर दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य में डिग्री प्राप्त की। 1950 के दशक के अंत में दिल्ली व बोम्बे में एकल प्रदर्शनी करने के बाद 1961–62 में भेजने में फ्रांस सरकार की स्कॉलरशिप से पेरिस में कार्य किया, वहां से स्वदेश लौटने से पूर्व इला ने यूरोप व पश्चिमी एशिया में रोमनस्क व बाइजेन्टाइन कला का अध्ययन किया। तत्पश्चात इंजली ने भारत, इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी और रूस में निवास करते हुए कार्य किया और तब अंजली ने देश विदेश में लगभग 30 से अधिक एकल प्रदर्शन किया तथा अंतर्राढट्रीय प्रदर्शनियों में भागलिया। मेनन के चित्र भारत व विदेशों के संग्रहालयों में संग्रहित हैं। भारत की महत्वपूर्ण चित्रकर्ती होने के साथ म्यूरल कलाकार भी है। अंजली ने एल्जीयर्स बिनाले सओ पउलो बिनाले ब्राजील तथा तीन त्रिनाले नई दिल्ली में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

**माधवी पारेख :–**

लोक कला के सार को जितना माधवी पारेख ने सहेजा शायद उतना किसी अन्य कलाकार ने नहीं सहेजा।माधवी पारेख का जन्म 1942 में गुजरात के एक ग्राम में हुआ। माधवी एक स्वयं सिद्ध चित्रकार रहीं है, जिन्होंने 1969 में गुजरात के लोक परम्परा के चित्रों से प्रभावित हो चित्रण आरम्भकिया। इसीलिए माधवी के चित्रों में पारस्परिक समतल पृढठभूमि पर अलंकारिक तत्वों से युक्त आकृतियों को महत्वपूर्ण रूप से देखा जा सकता है।

1964 से माधवी विभिन्न महत्वपूर्ण एकल व सामूहिक प्रदर्शनियों में भाग लेती रही है जिनमें वाटरकलर बाई फोर वीमेन आर्टिस्ट, भारत भवन गोपाल (1987), जहांगीर आर्ट गैलेरी, बोम्बे (1987), कन्टेम्परेरी आर्ट सहमत, ललित कला अकादमी नई दिल्ली में 1990 में प्रदर्शित हुई प्रमुख है। माधवी पारेख व उनके कलाकार पति मनु पारेख ने अनेक सफल प्रदर्शनिया की जिनमें 13 सामुहिक प्रदर्शनिया भारत में व विदेश में तथा 12 कला शिविर ओर चित्रकार्यशालाएं सम्मिलित है।

**अनुपम सूदः–**

भारत की नई पीढी के श्रेष्ठ कलाकारों में से एक है। यद्यपि उन्होने एक्रेलिक माध्यम से चित्रण कर्म में महारथ हासिल की है फिर भी उनके इन्टेग्लियो छापा चित्र विशेष महत्व रखते है। अनुपम सूद ने छापा चित्रण की विभिन्न विधाओं में कार्य किया।

1945 में पंजाब के होशियारपुर में जन्मी अनुपम सूद ने 1967 में देहली कालेज ऑफ आर्ट से डिप्लोमा करने के पश्चात छापा चित्रण में विशेढा अध्ययन किया। 1971–72 में ब्रिटिश कॉसिल छात्रवृत्ति प्राप्त कर लन्दन के स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट से छापा चित्रण का अध्ययन किया। देहली कालेज से डिप्लोमा करने के पश्चात से उन्होने 1976 तक 12 एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया। और भारत, कोरिया, और अमेरिका में 1960 से 1996 तक 34 अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया जिनमें प्रमुख हैः– प्रदर्शनी न्ययॉर्क (1975) द फ्लोरेंस त्रिनाले और तृतीय त्रिनाले, चतुर्थ, पंचम बिनाले, अन्तर्राष्ट्रीय प्रिन्ट बिनोले (1981–83) पंचम त्रिनाले इडिया व स्विटजरलेन्ड में सप्तम नोरेवेग्न प्रिन्ट बिनाले 1982, ब्रिट्रिश प्रिन्ट बिनाले, वेडकोर्ड (1985) प्रिन्ट मेकिंगइन, प्रिन्ट मेकिग इन इंडिया सिंस 1850 ललित कला अकादमी नई दिल्ली (1986) व एडक इन्टर नेशनल प्रिन्ट बिनोले बर्लिन (1986) इन्टरनेशनल प्रिन्ट बिनाले भारत भवन भोपाल । (1995) अनुपम राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में 1969 से 1995 के मध्य 19 बार पुरस्कृत हुई।

**नलिनी मालिनी** :–

नलिनी की विषयवस्तु में आकृतियों की विविधता है। आकृतियाँ, अन्तर्मुखी, खामोश तथा वातावरण सन्नाटे भरा होता है। सन्नाटा जो मात्र नलिनी के चित्रों के पात्रों के जीवन का न होकर हमारा अपना भी होता है।

नलीनी मालिनी 1940 में कराची में जन्मी और 1969 में सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से डिप्लोमा किया। नलिनी ने देश व विदेश में अनेक चित्र प्रदर्शनियां की। नलिनी ने मिथ एण्ड रियलिटी, म्यूजियम ऑफ मोडर्न ओक्सफोर्ड 1982, सेवन इंडियन आर्टिस्टस्, जर्मनी 1982. फेस्टीवल आफ इंडिया, लन्दन 1982, आदि विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी समारोह में भाग लिया।

'इंडिया सोंग्स' 1993 में आस्ट्रेलिया में हुई चल प्रदर्शनी व 1995 में जोहन्सबर्ग बिनाले में तथा ब्रिसबेन त्रिनाले 1996 व 1996 में एक अन्य प्रदर्शनी एशिया सोसायटी न्यूयार्क में ट्रेडीशन्स / टेन्शन्स में भागीदारी की।

**अर्पिता सिंह :–**

अर्पिता सिंह ने विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ रचीं, जिन्हें हम तीन भागों में बांट सकते हैं। प्रथम आकृतिमूलक कृतियां, द्वितीय बाल कला पर आधारित कृतियाँ तथा तृतीय अमूर्तवादी कृतियां। उनकी कृतियां किसी स्कूल के बच्चे की ड्राइंग की कापी की तरह हैं। उनके कुछ चित्र अमूर्तन नियमावली पर आधारित प्रतीत होते हैं, परतु उनमें विचित्र सा बल या शक्ति का भी आभास होता है।

पश्चिमी बंगाल में 1937 में जन्मी अर्पिता ने अपनी कला शिक्षा दिल्ली के स्कूल ओफ आर्ट और दिल्ली पोलिटिनिक से ली। अर्पिता ने 1981 और 92 में चडीगढ आलइंडिया ड्राईग एग्जीबीशन अवार्ड, चन्डीगढ प्राप्त किया। 1987 अल्जीरिया बिनाले अवार्ड व 1991 में साहित्य कला परिढाद से परिढाद सम्मान पुरुस्कार प्राप्त किया। उन्होंने असंख्य चित्र प्रदर्शनियां की जिनमें प्रमुख है तृतीय व पंचम त्रिनाले इंडिया 1975 और 82, पेरिस व लन्दन में फेस्टीवल ऑफ इंडिया, हवाना बिनाले 1986, पांच हिन्दुस्तानी चित्रकार इंस्टाबुल अंकारा, युगोस्लाविया 1985. भारत भवन बिनाले, भोपाल 1986–88 और इंडोग्रीक कल्चरल फेस्टीवल 1988, एथेन्स और दिल्ली जेनेवा 1984 समसामयिक आकृतिमूलक भारतीय कला कुवैत 1988 इंडिया सोगय 1993 सिडनी

1993, इंडियन एन्काउन्टर्स लन्दन 1993, अर्पिता सिंह की कृतियां नगमा और ललित कला अकादमी नई दिल्ली, भारत भवन भोपाल, विदेश मंत्रालय नई दिल्ली और अल्बर्ट म्यूजियम लन्दन में संग्रहित है।

**अर्पणा कौर :–**

अर्पणा के चित्र गुरुत्वाकर्षण से मुक्त उन्मुक्त आकाश की ओर विचरते हैं, और पुरूष प्रधान दुनिया में वे चित्रों के माध्यम से आत्मकथा लिखती हैं। अपनी मां के उपन्यास होमलेस (Homeless) ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। उनका नारी पक्ष का चित्रण सम्पूर्ण जीवन के विकास क्रम को उभारता है जैसे बच्ची, योवन तथा वृद्धावस्था आदि। अर्पना कौर एक स्वयम् सिद्ध कलाकार है। अपर्ना का जन्म 1954 दिल्ली में हुआ।

1975 और 1996 के मध्य 18 अपने चित्रों की 18 सफल प्रदर्शनियों की, नौ राढट्रीय व अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियो, कला उत्सवों में भाग लिया जिनमें प्रथम बगदाद बिनाले 1989 एल्जेरियन बिनाले 1987 में ओराफिट (जापान) में तथा प्रदर्शनी इमेजन्ड रीति (मार्डनआट म्यूजियम, बार्सिलोना) साओपओलो व रिआडेजेनेटरी (1994–95) में सामुहिक प्रदर्शनियां की 1994–95 में अर्पिता ने जापान फाउण्डेशन मैक्समूलर भवन तथा ललित कला अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित नेचर एण्ड एन्वाएरमेन्ट वर्कशॉप में भाग लिया।

1985 में अर्पना को आइफेक्स पुरस्कार, 1986 में अलजियर्स विनाले सांत्वना पुरस्कार, और छठे त्रिनाले, भारत में स्वर्णपदक प्राप्त हुआ।

**सरोजपाल गोगी :–**

सरोजपाल गोगी का जन्म नेओली यूपी में हुआ था। गोगी ने दो साल तक 1961 व 62 कॉलेज आफ आर्ट वनस्थली, राजस्थान में अध्ययन किया तत्पश्चात 1967 में गोगी ने कालेज आफ आर्ट लखनउ से पेन्टिग में डिप्लोमा किया तथा दिल्ली के कॉलेज ऑफ आर्ट से पेन्टिग में स्नातकोत्तर अध्ययन की विद्यार्थी रही। तदन्तर 1969 से गोगी ने चित्रशालाओं व केम्पस् में लगातार भागीदारी निभाई।

गोगी सरोज पाल के पश्चात भी अनेक नाम गिराए जा सकते हैं जिन्होंने कला के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को सुदृड बनाया। उपरोक्त वर्णित महिला कलाकारों ने आधुनिक समसामयिक कला क्षेत्र में प्रगति के सोपनो को पार करते हुए सफलता और सुदृड अस्तित्व के प्रतिमान स्थापित किये। जिस पर इनके पश्चात आने वाली महिला चित्रकारों ने उत्तरोत्तर प्रगति जारी रखी और आज सबके समक्ष महिला चित्रकार कहीं पुरुष चित्रकारों से पीछे नहीं है, समान अस्तित्व के साथ आगे बढ़ रही है और प्रतिष्ठा पा रही है।

**संदर्भः–**


– कपूर गीता : कंटेंपरेरी इंडियन आर्टिस्ट, विकास पब्लिकेशन 1978

– फारूकी अनीश : इंडियन वूमेन आर्टिस्ट,नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट 1986

– दास श्रीमती कुसुम : भारतीय पाश्चात्य कला, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी

लखनऊ प्रथम संस्करण 1977

– डालमिया यशोधराः अमृता शेरगिल ए लाइफ, पेंगुइन प्रकाशन न्यू यॉर्क 2006

– भारद्वाज विनोद : आधुनिक कला कोष, सचिन प्रकाशन प्रथम संस्करण 1959

– समकालीन कला :ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवंबर 1983

– विरंजन रामः समकालीन भारतीय कला निर्मल बुक एजेंसी, विश्वविद्यालय परिसर कुरुक्षेत्र 2003

– रामचन्द्र रॉय,पी.आर, मॉडर्न इंडियन पेन्टिंग्स 1953